

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 27/06/2016

● अंक - 568 ● तारीख - 28 जून 2016, आषाढ कृष्ण - 08 ● मंगलवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया

● पृष्ठ - 01

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)



स्वयं प्रेम से पूर्ण हो जाओ, फिर आपके शब्दों में भी प्रेम का प्रसार होगा।

गणपति-आराधना



इस मंत्र के द्वारा भगवान गणेश को दीप दर्शन कराना चाहिए

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं बह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
त्राहि मां निरयाद् घोरद्वीपज्यात ॥

दोहावली

पुण्य प्रीति पति प्रापतिउ परमारथ पथ पाँच ।
ललहिं सुजन परिहरहिं खल सुनहु सिखावन साँच ॥

तुलसीदास कहते हैं कि पूण्य, प्रेम, प्रतिष्ठा, प्राप्ति और परमार्थ का मार्ग-सज्जन पुरुष इन्हें ग्रहण करते हैं। इसके विपरीत दुर्जन मनुष्य इनका परित्याग कर देते हैं। इस सच्ची सीख को भली-भाँति समझ लो।

ईश्वर के करीब लाता है दया-भाव

'दया धर्म मूल है'। सभी धर्मग्रंथों में दया पर ही अधिक जोर दिया गया है। अगर आप दया नहीं कर सकते हैं तो आपका यह मानव जीवन निरर्थक है। यह तो उसी प्रकार की बात हुई कि जन्म लिया, खाए-पिए, बड़े हुए, विवाह-शादी हुई, वंशवृद्धि की परिवार को आगे बढ़ाया और कालांतर में जीवन यात्रा पूरी कर पहुंच गए भगवान के घर। ऐसा जीवन तो पशु-पक्षी भी जीते हैं।..... तो फिर हम इंसानों व पशु-पक्षियों में क्या अंतर रह जाता है ?

अगर आप किसी की एक छोटी-सी भी मदद करते हैं तो वह व्यक्ति कृतज्ञ भाव से आपकी ओर देखता है तब आपको जो आत्म-संतोष मिलता है, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। कभी आप भूखे बच्चों को रोटी खिलाकर, फटेहाल ठंड में ठिठुरते लोगों को वस्त्र पहनाकर, किसी सताई हुई नारी को यह दिलासा देते हुए कि 'बहन चिंता मत कर, तेरा भाई जिंदा है' उसके सिर पर अगर आप हाथ रखेंगे तो भावुकतावश आपकी आंखों से भी इस बात को लेकर अश्रुधारा बह निकलेगी कि आज मैंने जिंदगी में अच्छा काम किया है। जब ईश्वर के सामने हम अपने कर्मों का हिसाब-किताब देने हेतु खड़े होंगे तो बिल्कुल निश्चिंत होंगे, क्योंकि आपके मन में यह भाव लगा रहेगा कि मैंने अपनी जिंदगी में किसी आत्मा को कभी कोई कष्ट नहीं पहुंचाया। मानव सेवा, माधव सेवा: मानव की सेवा नारायण (भगवान) की सेवा के बराबर मानी गई है।

ये हैं मानसून में घूमने के लिए इंडिया के 10 फेमस डेस्टिनेशन

दूध सागर, गोवा	लोनावाला, महाराष्ट्र	कुर्ग, कर्नाटक	चांदीपुर, ओडिशा	दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल
बारिश के मौसम में दूधसागर वाटरफॉल से लेकर गुजरती है माउंट रेत।	ये खूबसूरत हिल स्टेशन इंडिया के रिवर, जारलैंड के नाम से मशहूर है।	वेस्ट हनीमून डेस्टिनेशन के लिए फेमस है, इसे ये इंडिया का स्कॉटलैंड भी कहते हैं।	बारिश के मौसम में इस बीच की खूबसूरती में वार चांद लग जाते हैं।	यहां साल के 126 दिन बारिश होती है। टॉप ट्रेन में बैठकर इसका लुफ ले सकते हैं।
मन्नार, केरल	शिलॉन्ग, मेघालय	उदयपुर, राजस्थान	परवाणु, हिमाचल	पुडुचेरी
यहां पहाड़ियों की चोटियों को टकती हुई धुंध की छत्रा देखा जा सकता है।	फेवरिट मानसून डेस्टिनेशन हैं, इसे ईस्ट का स्कॉटलैंड भी कहा जाता है।	पूरव का वेनिस कहे जाने वाले शहर में हे कई झील और मानसून महल है।	शिवांगिक की पहाड़ियों में बसा ये इलाका चंडीगढ़ से सिर्फ 35 किमी. की दूरी पर है।	देश के टॉप टूरिस्ट डेस्टिनेशन में शामिल, बारिश में पूरने का अलग मजा है।

नई दिल्ली. देश की नेचुरल ब्यूटी मानसून में दोगुनी हो जाती है। हिमालय की पहाड़ियों से लेकर साउथ के समुद्र तक ऐसी कई डेस्टिनेशन हैं, जहां आप मानसून का भरपूर लुफ ले सकते हैं। हर साल हजारों टूरिस्ट यहां आते हैं। आइए जानते हैं ऐसी ही कुछ जगहों के बारे में जहां बारिश में घूमने का मजा कुछ अलग ही है।

नरों को ऊर्जा से भरता है योग

योग शरीर को लचीला बनाता है। जो मुद्रा शुरु में असंभव लगती है वह अभ्यास के बाद संभव हो जाती है

योग हमारे नर्वस सिस्टम को नियंत्रित कर शारीरिक व मानसिक परेशानियों से बचाता है। बोस्टन यूनिवर्सिटी मेडिसिन के शोधकर्ता समूह का कहना है कि हमारी खोपड़ी (ब्रेन) के बेस से निकलने वाली सबसे बड़ी कॉर्नियल नर्व वेगस का काम है श्वसन, पाचन और नर्वस प्रणाली को नियंत्रित करना। यह एयर ट्रेफिक कंट्रोलर की तरह काम करती है। योग वेग नर्व की टोनिंग करके हमारे तन और मन को नई ऊर्जा, उमंग व उत्साह प्रदान करता है। जानते हैं योग से होने वाले शारीरिक और मानसिक फायदों के



बारे में -
फायदे -

योग शरीर को लचीला बनाता है। जो मुद्रा शुरु में असंभव लगती है वह अभ्यास के बाद संभव हो जाती है। लचीलेपन के कारण हमें दर्द व पीड़ा से राहत मिलती है। मांसपेशियां मजबूत होने के साथ इतनी सक्षम भी होनी चाहिए कि हमें गठिया दर्द व बैक पेन से बचाएं। योग मांसपेशियों को लचीला व मजबूत बनाता है।

योग करते समय शरीर के सारे जोड़ पूरी क्षमता से घूमते हैं। इससे कम उपयोग में आने वाले कार्टिलेज भी फैलती या सिकुड़ने का अभ्यास करती हैं। कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन के अनुसार योग स्ट्रेस हार्मोन के स्तर को घटाता है और हड्डियों में कैल्शियम की जरूरी मात्रा बनाए रखता है। यह रक्त का प्रवाह बढ़ाता

है। योग करने से कोशिकाओं को ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन मिलती है। योग खून के थक्के भी घटाता है यानी हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा कम करता है। योग करने से मांसपेशियां खिचती हैं। इससे शरीर के अंगों के ऊतकों में आई सूजन में कमी आती है व शरीर की संक्रमण से लड़ने की क्षमता बढ़ती है और कैंसर कोशिकाएं नष्ट होती हैं। एक ताजा अध्ययन का निष्कर्ष है कि प्राणायाम करने वाले ज्यादा देर कसरत व मेहनत कर सकते हैं। तीन माह श्वसन करने से ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है।

अधिक नमक के सेवन से मल्टिपल स्कलेरोसिस का खतरा



भोजन में अधिक मात्रा में नमक के सेवन से न सिर्फ दिल संबंधी रोग का खतरा होता है, बल्कि यह खतरनाक मल्टिपल स्कलेरोसिस (एमएस) नामक बीमारी का भी कारण हो सकता है, जो एक ऑटोइम्यून बीमारी है और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती है। अध्ययन में यह बात सामने आई है कि ज्यादा मात्रा में नमक का सेवन

प्रतिरक्षा कोशिकाओं को प्रभावित करता है, जो इस बीमारी का कारण है और वर्तमान में इसका कोई इलाज नहीं है। मल्टिपल स्कलेरोसिस मस्तिष्क तथा शरीर के अन्य भागों के बीच संचार को बाधित करने के अलावा मरीज को कई प्रकार से प्रभावित करता है। यह चलने-फिरने में बाधा उत्पन्न कर सकता है और इससे एकाग्रता, ध्यान, स्मृति तथा फैसले लेने की प्रक्रिया में बाधा पहुंच सकती है। युनिवर्सिटी ऑफ वरमांट में एक शोधकर्ता दिमित्रि मत्सोव ने कहा कि ऑटोइम्यून बीमारी को प्रभावित करने के लिए वातावरण के कारक कैसे तथा क्यों व्यक्ति की अनुवांशिक रचना से संबंधित हैं, इसके बारे में एक व्यापक समझ प्रदान करने के प्रति हम आशा करते हैं।

कई बीमारियों के संकेत हैं खरटे

खरटे लेने वाला व्यक्ति दया का पात्र है। वह अपने साथ सोने वाले व्यक्ति की नींद खराब कर सकता है। लेकिन, उसके खरटे किसी गंभीर गड़बड़ी का संकेत देते हैं। जरूरी नहीं है कि खरटे लेने वाले हर व्यक्ति को स्वास्थ्य से संबंधित कोई समस्या हो। फिर भी, नींद के दौरान

कुछ समय के लिए सांस लेने की प्रक्रिया बंद होने की बीमारी - स्लीप एपनिया से पीड़ित व्यक्तियों को खरटे हमेशा आते हैं। विशेषज्ञों का कहना है, बीमारी से पीड़ित व्यक्तियों की संख्या बढ़ रही है। अमेरिका में ढाई करोड़ व्यक्ति स्लीप एपनिया से पीड़ित हैं। इसका एक



कारण मोटापा है। स्लीप एपनिया के परिणाम गंभीर होने के साथ अप्रत्याशित हैं। कैसे काम करता है स्लीप एपनिया

ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया (ओएसए) में हवा जाने के रास्ते में रुकावट से फेफड़ों तक ऑक्सीजन पहुंचना मुश्किल हो जाता है।

क्रांति-कथा

भूमिका

जिस युग में हमने जन्म लिया, वह युग ही सबसे बड़ा है। ओहो कितना काम पड़ा है -

जो बालक करे तोतरि बातां,
सुनहि मुदित मन पितु अरू माता।

ज्यों बालक तुतला कर कहता, माता-पिता के आगे।
ऐसे ही हम बोल रहे हैं, सेवा के हित जागें।।

आपश्री संतो के, सुधि पाठकों के, चरण कमलों में प्रणाम करता हुआ सत् प्रयत्न करूंगा कि क्रांति कथा क्यों जीवन के क्रांति कथा के। जीवन के 68 बसंत आनंद के साथ सदुपयोग करने के साथ यह लगा कि (निरन्तर अच्छाई की तरफ बढ़ते हुए) इस युग में कई क्रांतिओं की आवश्यकता है, जब आचरणों में गिरावट का, धन के प्रति लोभ का, बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा का, नारी के प्रति असम्मान का, किनका जो की जो स्थितियाँ देखता हूँ, तो रातों की नींद एक बार नहीं असंख्य बार उड़ती है।

परिवर्तन अब आवश्यक है, सेवा हित मिल कर आओ।
क्रांति कथा सुन करो समझ कर, जीवन धन्य बनाओ।
जन्म दिया किया पालन-पोषण, चलना हमें सिखाया।
धन्य वहीं मानव है जिसने, जीवन सफल बनाया।

जहाँ मंगल ग्रह के चारों तरफ भारत का उपग्रह परिक्रमा करता है, वही माता-पिता के हाथ में एक पत्र पकड़ा करके चौराहे पर खड़ा करके निर्मम परिवार वाले आगे बढ़ जाते हैं।

पिता विधुर हो जाये कभी तो, पड़ जाये भोजन के लाले।
संतानें विपरीत अगर तो, बड़े प्यार से जिनको पाले।।
पिता वृद्ध लाचार अगर तो, स्वास्थ्य में बटे पड़ जाए।
नहीं पिता को पेंशन मिलती, ऐसा पिता कहाँ पर जाए।।

क्रमशः अगले अंक में...

मानव मन के बोल

मानव मात्र एक समान



गतांक से आगे...

अधिक तो नहीं रहता था, वो दवाई ला दी, एक-दो के पोस्ट कार्ड भी लिखे। मुझे उससे प्रेरणा मिली, गणेश लाल जी बम्ब साहब से, मेरे प्रातःस्मरणीय स्वर्गवासी, वो भी रोज आते थे हॉस्पिटल। गणेश लाल जी बम्ब साहब तो मेरे भी मार्ग दर्शक हैं। मैं तो कभी-कभी चूक जाता था, किसी दिन नहीं भी आ पाता था, शाम को पछताता था। लेकिन गणेश लाल जी बम्ब साहब रोज आते थे, वो भी पोस्टकार्ड लिखते थे। किसी के पत्र लिखना होता तो लिख करके लेटर बॉक्स में डाल देना। उनसे भी मैं दो बार मिला, मैंने उनको वहीं मनुष्य सच्चा मोक्ष पाने का अधिकारी होता हूँ। जो यथा प्राप्त में शांत और संतुष्ट, व सब प्रसन्न रहता हूँ। 130 कहा-मेरे को आपसे प्रेरणा मिलती है। "महाजनो येन गतः स पन्थाः।" उन्होंने मुझे जो बात कही सेवा की, कैलाश जी सेवा के लिये ये जीवन मला है। ये बेला अमृत आ गया है। आलसी नहीं बनें, अभागे नहीं बनें, हंस का रूप हैं हम, कोए जैसा व्यवहार ना करें। सच्ची सेवा करनी है, घाव पर मरहम लगाना है। तो मैंने अपने कान के छेद से हृदय में उतार लिया। यही तो बात हुई ना, कि ये मूर्ति तो करोड़ों रुपये की है, क्योंकि कान का छेद हृदय में जाता है और ये मूर्ति 100-50 रुपये से ज्यादा की नहीं है, एक कान से दूसरे कान में छेद जाता है, बातों का असर नहीं होता। अरे साहब क्या फर्क पड़ता। बाबूजी मेरी अच्छी बात को ग्रहण कर लेना, बुरी बात पर विचार मत करना। बोले-मैं वैसे भी आपकी बातों पर कहां विचार करता हूँ? मैं तो आपकी बातों पर ऐसे ही ध्यान क्यों देता हूँ? तो ये भी गड़बड़ हो गया ना। ध्यान क्यों नहीं देते अच्छी बातों पर और बोल लेते हो कुछ भी।

क्रमशः अगले अंक में...

सम्पादकीय

रियासत काल की बात है। एक महारानी को एक दिन नदी-विहार की सुझी। आदेश मिलने की देर थी, तत्परता के साथ उपवन में व्यवस्था की गई। महारानी ने जी भर विहार का आनन्द लिया। दिन ढलने लगा और शीतल हवाएं चली तो महारानी को सर्दी अनुभव हुई, उन्होंने सेविकाओं को अग्नि का प्रबन्ध करने का आदेश दिया। सेविकाओं ने काफी खोज-बीन की लेकिन सूखी लकड़ियां नहीं मिली। उन्होंने महारानी को अपनी असमर्थता बताई। महारानी ने आदेश दिया—“सामने जो झोपड़ियां दिख रही हैं, उन्हीं को ईंधन के रूप में काम ले लिया जाए।” झोपड़ियां तोड़ दी गईं और महारानी के लिए आग तापने का प्रबन्ध हो गया।

दूसरे दिन झोपड़ी वालों ने महाराजा से गुहार की। महाराजा ने गम्भीरता पूर्वक विचार किया। उन्होंने स्वयं को उन गरीबों की जगह रख कर देखा—उनकी वेदना का अनुभव किया। तब निर्णय दिया कि महारानी राजमहल छोड़ कर निकले, हाथ में कटोरा लेकर भिक्षा मांग कर धन एकत्र करें, उस धन से झोपड़ियों का पुनर्निर्माण कराए : तभी पुनः राजमहल में प्रवेश करें।

अस्तु ! दूसरों की वेदना का अनुभव करने के लिए हमें स्वयं को उसके स्थान पर खड़ा होना पड़ेगा। महापुरुष एक शाश्वत नियम बता गए हैं—‘दूसरों के साथ वही व्यवहार करो, जो तुम्हें अपने लिए पसंद हो’ ऐसे व्यवहार के लिए व्यक्ति को अपना ‘स्व’ छोड़ना पड़ेगा। जब हम अपने सोच को इस दिशा में ले जाएंगे, तभी अपने कर्तव्य का सही निर्धारण कर पाएंगे।



कड़वे प्रवचन

जीवन में कभी अमीरी के दिन आते हैं तो कभी गरीबी के दिन आते हैं। कभी तो बटुआ ठसाठस भरा होता है। और कभी जब में फूटी कौड़ी भी नहीं मिलती। जीवन में किसी

न किसी रूप में हर एक को उतार - चढ़ाव देखना पड़ता है। उथल-पुथल से गुजरना पड़ता है। कभी-कभी आपके पास बहुत कुछ होता है लेकिन आपके माथे पर बल पड़े रहते हैं और कभी-कभी आपके पास जो होता है, वह आपके लिए पर्याप्त नहीं होता। लेकिन आपके होंठों पर मुस्कान खिली रहती है। जो आपके पास है यदि आप उससे सुखी नहीं हैं तो आपके पास चाहे जितना भी आ जाए फिर भी आप सुखी नहीं हो सकेंगे।

बने बनाए पथ पर चलने वाली नहरें होती हैं, नदियां नहीं। नदियां चट्टानों को चीरकर अपना पथ स्वयं बनाती हैं और आगे बढ़ती हैं। तभी तो वह सागर से मिल पाती हैं। न सिर्फ सागर से मिलती हैं वरन् खुद सागर हो जाती हैं। लकीर के फकीर मत बनो। अपना पथ स्वयं गढ़ो और आगे बढ़ो। स्वयंभू बनो, स्वयं बुद्ध बनो। प्रवास के विरुद्ध बहना जिंदा होने का सबूत है। सीधे-सरल रास्ते पर तो कोई भी चल लेता है। पर उनका कोई इतिहास नहीं बनता। कभी आपने सोचा: कि राम का जीवन-चरित्र इतना बड़ा क्यों है? इसका जवाब यह है कि उन्हें गुरुकुल के कारण महल छोड़ना पड़ा। कैकयी के कारण राजमहल छोड़ना पड़ा। इतना ही नहीं वनवास भी झेलना पड़ा। रावण के कारण युद्ध करना पड़ा। धोबी के कारण सीता को खोना

आदिवासी सुरता को लगाएं कृत्रिम पांव

-जीवन यापन के लिए दी सिलाई मशीन



उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने एक आदिवासी महिला के कृत्रिम पांव लगाने के साथ ही जीवन यापन के लिए सिलाई मशीन प्रदान की। यह जानकारी देते हुए संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल ने बताया कि 6 बेटे-बेटियों के नौ सदस्यों वाले परिवार का बड़ी कठिनाई से पोषण कर रहे आबू के खेतीहर आदिवासी मंशाराम ने बड़ी बेटे के पाई-पाई बचाकर चार वर्ष पहले हाथ पीले किए थे। पति-पत्नी की एक बड़ी चिन्ता दूर हो गई थी लेकिन अब भी शेष तीन पुत्र और तीन पुत्रियों के भविष्य को लेकर चिन्तित थे। जमीन के छोटे से टुकड़े की खेती से परिवार चलाना मुश्किल था। पति-पत्नि दोनों ही मजदूरी कर जैसे-तेसे जीवन की गाड़ी ठेल रहे थे कि एकाएक उन पर आसमान टूट पड़ा। बड़ी बेटा सुरता विवाह के एक वर्ष बाद पति के साथ मजदूरी के लिए जा रही थी। ट्रेन में ही पति के नशा करने की आदत पर सुरता का उससे विवाद हो गया। नशे में धुत पति ने न केवल उससे मारपीट की बल्कि सिहावा स्टेशन से आगे चलती ट्रेन से धक्का दे दिया और खुद भी नीचे कूद पड़ा। उसकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई जबकि सुरता के दोनों पांव रेल के पहियों से कट गए। पिता मंशाराम ने कर्ज लेकर जैसे-तेसे बेटे का ईलाज करवाकर उसके प्राण बचा लिए लेकिन बेटे की देखभाल की खातिर उसे मजदूरी करना छोड़ना पड़ा। वंदना अग्रवाल ने बताया कि परिवार की स्थिति का संस्थान को पता लगते ही सुरता ओर उसके माता-पिता को उदयपुर लाया गया। यहां सुरता के निःशुल्क कृत्रिम पांव लगाए गए और जीवन यापन के लिए सिलाई मशीन, वस्त्र एवं राशन सामग्री प्रदान की गई।

पड़ा। अपने ही पुत्रों से युद्ध लड़ना पड़ा और इस 'पड़ा-पड़ा' में ही राम चरित्र हो गया 'सबसे बड़ा'। राम के जीवन में मुसीबतों का अंतहीन सिलसिला था फिर भी कोई शिकायत नहीं, चेहरा खिला-खिला था। राम का चरित्र ही उनका जीवन संदेश है, उनकी चर्या है, उनका उपदेश है। राम सरल है, उनका नाम, चरित्र और स्वभाव भी सरल है।

सूर्य मंदिर, मोढ़ेरा



यह मंदिर अहमदाबाद से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण सम्राट भीमदेव सोलंकी प्रथम ने करवाया था। यहां पर इसके संबंध में एक शिलालेख भी मिलता है। सोलंकी सूर्यवंशी थे, वे सूर्य को कुलदेवता के रूप में पूजते थे। इसलिए उन्होंने अपने आराध्य देवता की आराधना के लिए एक भव्य सूर्य मंदिर बनाने का निश्चय किया। इस प्रकार मोढ़ेरा के सूर्य मंदिर ने आकार लिया। भारत में तीन सबसे प्राचीन सूर्य मंदिर हैं जिसमें पहला ओडिशा का कोणार्क मंदिर, दूसरा जम्मू में स्थित मार्तंड मंदिर और तीसरा गुजरात के मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर।

यह मंदिर उस समय की शिल्पकला का एक अनोखा उदाहरण है। इस विश्व प्रसिद्ध मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि पूरे मंदिर के निर्माण में जुड़ाई के लिए कहीं भी चूने का उपयोग नहीं किया गया है। ईरानी शैली में निर्मित इस मंदिर को भीमदेव ने तीन हिस्सों में बनवाया था। पहला हिस्सा गर्भगृह, दूसरा सभामंडप और तीसरा सूर्य कुण्ड है। मंदिर के गर्भगृह के अंदर की लंबाई 51 फुट 9 इंच तथा चौड़ाई 25 फुट 8 इंच है। मंदिर के सभामंडप में कुल 52 स्तंभ हैं। इन स्तंभों पर बेहतरीन कारीगरी से विभिन्न देवी-देवताओं के चित्रों और रामायण तथा महाभारत के प्रसंगों को उकेरा गया है। इन स्तंभों

को नीचे की ओर देखने पर वह अष्ट कोणाकार और ऊपर की ओर देखने पर वह गोल दृश्यमान होते हैं। इस मंदिर का निर्माण कुछ इस तरह किया गया था कि जिसमें सूर्योदय होने पर सूर्य की पहली किरण मंदिर के गर्भगृह को रोशन करे। सभामंडप के आगे एक विशाल कुंड स्थित है जिसे लोग सूर्यकुंड या रामकुंड के नाम से जानते हैं। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने आक्रमण के दौरान मंदिर को काफी नुकसान पहुंचाया और मंदिर की मूर्तियों की तोड़-फोड़ की। वर्तमान में भारतीय पुरातत्व विभाग ने इस मंदिर को अपने संरक्षण में ले लिया है। ये मंदिर गुजरात के मोढ़ेरा में स्थित है।



मुस्कान मानवता की

(मानव धर्म शृंखला का षष्ठम् (6) पुष्प)

क्या हो गया आपको ? इन्सानियत कहाँ खो गयी ? एक लाख से ज्यादा बेटियाँ जिनका विवाह बड़े उत्साह के साथ हुआ। उन बेटों के माता-पिता ने अपना दिल खोलकर सब कुछ किया। दहेजरूपी दानव ने, दहेजरूपी राक्षस ने उनकी बेटों को ससुराल में दुःखी कर दिया। उनके ससुरजी ने अत्याचार किया, उनकी सासुजी ने गाली - गलौच किया। उनके पति ने उसको प्यार नहीं किया और वो वापस पीहर में जाके, आँखों में आँसू लाके रोती रहती है। ये मानवता को क्या हो गया? ये अधर्म क्यों बढ़ गया? ये पाप क्यों बढ़ गया? कोई है ? यक्ष बार - बार प्रश्न कर रहा है - हे! युधिष्ठिर, उत्तर दीजिये, कसूर किसका है? ऐसा ससुराल जहाँ दहेज रूपी भेड़िये आ गये। आप बहु को नहीं लाये, आपने किसी की बेटों को खरीद लिया। आपने आपके बेटों को बेच दिया। आज मानवता चित्कार कर रही है, आज मानवता रो रही है। हजारों बेटियाँ और हजारों बेटियों के माता - पिता दहेज की मेंट चढ़ गये। और एक दूसरी तरह की मानवता हँस रही है। जहाँ बहू को अच्छे संस्कार नहीं मिले। कहीं - कहीं ये भी हुआ कि बहू को अच्छे संस्कार नहीं मिले। अपने ससुराल में जाके वो घमंडी बन गई। अपने ससुराल में जाके पीहर के गुण गाती रही। अपनी सांसु को आदर नहीं दिया, अपने ससुरजी को इज्जत नहीं दी। अपने पति को प्रेम नहीं दिया और वापस घमंड की वजह से अपने पीहर में आके बैठ गई, और बड़े - बड़े नोटिस भिजवा देते हैं, बड़े - बड़े मुकदमे दायर कर देते हैं। झूठे - झूठे मुकदमे भी दायर कर देते हैं और पूरे ससुराल वालों को दुःखी कर देते हैं। ये मानवता नहीं है, ये दानवता है। ओ मेरी बेटियों, ओ मेरी पुत्रियों अच्छे गुणों को धारण कीजिये। आपके आँखों के, नेत्रों के प्रेम को हम प्रणाम करना चाहते हैं। हमारे सरस्वती पुत्र, आगे व्यवहार धर्म की कथा में आगे बढ़ रहे हैं।

कर्म के घाट पर धर्म की गंगा

अन्तर मन में सदभावों की व्यासे गंधे को पानी, भूखे को भोजन किस्मना जी, परदेसी हुआ रवाना

ओ हो..... है अखाड़ा परिषद - गीत बोलिये जगद्गुरु रामानन्दजी महाराज की जय। जगद्गुरु रामानन्दजी महाराज ने हमें मानव धर्म सिखाया। भेदभाव नहीं करना, ये ऊँच - नीच नहीं करना। ओ, किस कुल के हो ? मानव कुल के हो। किस धर्म के ? मानव धर्म के। किस जाति के ? मानव जाति के है। हम इन्सान हैं। हम भारतीय हैं, हम विश्व - बन्धुत्व रखते हैं। हम प्यार जानते हैं, हम प्रेम जानते हैं।

अंतर मन में सदभावों की पावन गंगा जब बहती 116 अंतरमन में सदभाव आने पर मानवता का पुष्प प्रस्फुटित हो जाता है। जैसे खिला हुआ गुलाब, खिला हुआ कमल। आपका ये हृदय आपका हॉ महाराज, कहाँ गया ? हृदय देना तो जरा ओ! हृदय देना, हृदय देना हॉ देओ - देओ, ये हृदय है। इस हृदय कमल को भेदभाव से दूर रखना। जब इन्सान ने इन्सान से नफरत की, मेरा भारत छोटा होता चला गया। जब इन्सान ने अलग - अलग कुएँ बना लिये। ये कुआँ हमारा, वो दूर का कुआँ आपका। कैसी मुखता है ? संत एकनाथजी जैसे महान इन्सान ने प्यासे गंधे को भी गंगा जल पिला दिया। उनमें भी उनको मानवता के दर्शन हो गये। संत ज्ञानेश्वरजी ने भैंसे की पीठ पर पड़े चाबुक से, अपने आप उसकी पीड़ा का अनुभव किया। ये सच्ची इन्सानियत है। जितने हमारे जगद्गुरुजी हुए, जितने हमारे गोसाईं जी महाराज हुए, जितने हमारे महामण्डलेश्वरजी हैं, जितने हमारे आचार्य जी हैं, श्रीमंतजी महाराज हैं, योगाचरिणी महाराज हैं, संत हैं, सब दयालु और कृपालु हैं।

यह जो सत्संग आप सुन रहे हो, ये मानव जाति का सत्संग है। ये व्यवहार का सत्संग है। आपका छोटा भाई यदि गरीब हो और आपको लक्ष्मीजी ने बड़ी कृपा की हो, तो सर्वप्रथम उस भाई की गरीबी को भी देख लीजिये, वो भूखा नहीं रह जाये। कहीं आपका भाई प्यासा तो नहीं है, कहीं आपकी बहिन दुःखी तो नहीं है, कहीं आपकी मौसीजी को दिक्कत तो नहीं है, उनकी दिक्कत को दूर कीजिये।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल न्अध्यक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडनी संपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी संपादन अत्योगी-घनश्याम मिश्र नरौड़

सादर आमंत्रण

दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमान्दितों की सेवा में सतत सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायताार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

श्री तुलसी रामायण पीठ, नई दिल्ली

दिनांक एवं समय

23 से 29 जून, 2016

दोपहर 3 बजे से सांय 6.30 बजे तक

स्थान : श्री गीता भवन मंदिर, मालवीय नगर, नई दिल्ली-17.

कथा व्यास: **पुज्य संजय कृष्ण जी 'सलिल'**

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने सुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करायेंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र: 9821651778, 9810158241, 9582043511

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

प्रधान अग्रवाल
अन्तराष्ट्रीय अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कैलाश "मानव"
मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक
नारायण सेवा संस्थान

कमला देवी
कोणाध्यक्षा
नारायण सेवा संस्थान

प्रशान्त अग्रवाल
अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान

वन्दना
निदेशिका
नारायण सेवा संस्थान

जगदीश आर्य
दूरदर्शी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

देवेन्द्र चौबीसा
दूरदर्शी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहूति आपकी भी कृपा सपरिवार अवश्य पधारें।